सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के समक्ष उभरती चुनौतियाँ : एक अध्यापक की नजर से

पंकज तिवारी



नोटबन्दी की घोषणा के बाद से हमने देखा था कि भारतीय रिजर्व बैंक लगातार अपने नियमों/निर्देशों में बदलाव करते आ रहा है। कुछ लोग उसके विषय में अपने तरीके से कुछ भी सोच सकते हैं। परन्तु स्कूल में अध्यापक होने के नाते में इस बात को भली प्रकार से समझ सकता था कि कुछ विशेष लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए यदि में कक्षा में आगे बढ़ता हूँ और कुछ समय पश्चात् मुझे लगता है कि लक्ष्य प्राप्ति के लिए मुझे मेरे पुराने निर्देशों में कुछ बदलाव की आवश्यकता है तो में आवश्यक बदलाव तत्काल ही करता हूँ। साथ ही बच्चों की प्रतिक्रियाओं को देखते हुए लक्ष्य प्राप्ति तक लगातार निर्देशों में आवश्यकतानुसार बदलाव को मेरी कक्षा के बच्चे स्वीकार भी करते हैं। साथी शिक्षकों से बातचीत करते हुए मुझे यह भी लगता है कि उनमें से कुछ एक बार निर्देशों को देने के बाद उनके अक्षरशः पालन पर भी यकीन करते हैं। उनका मानना है कि वे लक्ष्य भी निर्धारित करेंगे और रास्ता भी वे ही बताएँगे, क्योंकि उनके विद्यार्थी जीवन में उन्होंने भी वैसा ही किया है।

साथी शिक्षकों और उनके विद्यार्थियों से बातचीत से एक बात मोटेतौर पर निकलकर आती है कि मेरे आसपास दो तरह के शिक्षक हैं। पहले वे जो पूरा पाठ पढ़ा देने के उपरान्त पाठ के अन्त में दिए गए प्रश्नों को परम्परागत ढंग से याद कराने में अधिक विश्वास रखते हैं। गणित के मामले में ऐसे शिक्षक सीधे ही अभ्यास प्रश्नावलियों पर बच्चों को ले जाते हैं और कुछ सूत्रों को सुबह उठकर रटने की सलाह देते हुए कुछ चुनिन्दा प्रश्नों के हल बोर्ड पर उतार देते हैं। दूसरे प्रकार के शिक्षक वे हैं जो पाठ पर ज्यों-ज्यों चर्चा आगे बढ़ती है कक्षा में नए-नए प्रश्न तैयार करते हुए बच्चों के समक्ष चुनौतियों को रखते जाते हैं। यदि वह चुनौती बच्चों को अधिक ही कठिन लगी तो उस चुनौती के जैसे ही कुछ उदाहरण (जिन्हें हम हिंट भी कह सकते हैं) बच्चों के सामने रखते जाते हैं और बातचीत धीरे-धीरे आगे बढ़ते जाती है। गणित के मामले में ऐसे शिक्षक दिन-प्रतिदिन की बात से आगे बढ़ते हुए पहले कुछ अत्यन्त ही सरल उदाहरण लेकर बच्चों में आत्मविश्वास जगा देते हैं, फिर चुनौतियों को इस तरह से बच्चों के समक्ष रखते हैं कि लक्ष्य तक पहुँचने के बाद भी बच्चों को यह अहसास नहीं हो पाता है कि वे कब लक्ष्य पा चुके।

स्कूल में बच्चों द्वारा किसी गणितीय अवधारणा पर कार्य करते हुए प्रायः हम देखते हैं कि गणित विषय को पढ़ाने वाले शिक्षक परीक्षा में आने वाले सम्भावित प्रश्नों पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित करते हुए उन चुनिन्दा प्रश्नों को बार-बार लिखकर याद कर लेने की सलाह देते हैं। मध्यप्रदेश में कुछ चुनिन्दा विद्यालयों में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को लेकर पायलट प्रोजेक्ट चलाया जा रहा है। इन विद्यालयों के गणित पढ़ाने वाले शिक्षकों से लगातार बात करने के दौरान कुछ बिन्दु निकलकर आए हैं।

इन स्कूलों में गणित की किसी अवधारणा विशेष पर कार्य करने के दौरान बच्चों ने कक्षा में चल रही अवधारणा से सम्बन्धित कई ऐसे उदाहरण लिए जिन्हें गणितीय प्रश्न नहीं कहा जा सकता था। परन्तु वे उदाहरण उस अवधारणा को लेकर उनके मन में चल रही बैचेनी को उजागर कर रहे थे। जैसे एक शिक्षक ने बताया कि उनकी तीसरी कक्षा में एक दिन लम्बाई के मापन को लेकर बच्चों के बीच लम्बी चर्चा हुई थी। अगले दिन उनकी कक्षा में एक नया सीलिंग फैन लगाने के लिए एक इलेक्ट्रीशियन आए हुए थे। वे दीवार पर लगे विद्युत बोर्ड से छत में पंखा लगाने के स्थान तक बायर (बिजली का तार) लगाने वाले थे। बच्चों ने कमरे के फर्श में एक अधिक कोण की रेखाकृति खींचकर उसे स्केल से नापा और इलेक्ट्रीशियन से जब इस पर बात की तो उन्हें पता चला कि नाप करने का उनका तरीका काफी हद तक इलेक्ट्रीशियन को पसन्द आया। बच्चे यह जानकर बहुत ही खुश हुए थे कि उन्हें पंखे से बिजली के बोर्ड को जोड़ने वाले तार की लम्बाई नापने के लिए सीढ़ी की सहायता से दीवार और छत में कोई नाप नहीं करनी पड़ी थी। बच्चों द्वारा किए जा रहे इस कार्य के दौरान उनके शिक्षक लगातार यह देख रहे थे कि कुछ बच्चे कैसे तार की सही नाप के लिए अपने-अपने तरीके बता रहे थे और बाकी के बच्चे उन तरीकों में आने वाली कठिनाइयों पर

चर्चा कर रहे थे। इस कार्य के दौरान कुछ बच्चे फर्श पर चॉक से लाइन खींचते हुए उसे तार मान रहे थे, तो कुछ बच्चे उस लाइन को लकड़ी की स्केल से नापकर, लगने वाले तार की लम्बाई निकाल रहे थे। दो बच्चों के सुझाव थे कि उस लाइन के ऊपर एक सिरे से दूसरे सिरे तक तार रखा जाए। यह बहुत ही मज़ेदार तरीके से एक दिन पहले मापन पर हुई चर्चा पर उपयोगी कार्यकलाप था।

कक्षा का यह घटनाक्रम सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की कुछ विशेषताओं जैसे वास्तविक सीखने के लिए वातावरण तैयार करना, कक्षा में अर्जित विषयगत ज्ञान को दैनिक जीवन में परिस्थितियाँ आने पर उपयोग कर पाने की क्षमता का आकलन तथा स्कूल में प्राप्त की गई शिक्षा का स्वयं और साथियों के साथ मजा लेते हुए उस अवधारणा पर अपनी समझ को विकसित करने का एक अच्छा उदाहरण है।

इस दौरान शिक्षक लगातार यह देख रहे थे कि वे मापन सम्बन्धी अपनी कक्षा में पढ़ाने के स्वरूप में किस तरीके से और सकारात्मक परिवर्तन कर सकते हैं। परम्परागत तरीकों से आकलन करने के दौरान हम प्रायः देखते हैं कि मासिक टेस्ट में कुछ चुनिन्दा प्रश्नों के उत्तर के आधार पर बच्चों को इस तरह से अंक दे दिए जाते हैं जैसे एक दीवार के सहारे लगी सीढ़ी के प्रत्येक पायदान पर प्राप्त अंकों के आधार पर बच्चों को बैठा दिया गया हो। ग्रेड सिस्टम वाले आकलन के पैमाने में प्रत्येक पायदान पर एक बच्चा तो नहीं बैठा होता है, परन्तु बच्चों को घरों की सीढ़ियों जैसी किसी सीढ़ी में हम बैठा मान सकते हैं। जैसे किसी सीढ़ी पर 2-4 बच्चे बैठे हों, शेष बच्चे उनसे ऊपर की या नीचे की सीढ़ियों में अपने कुछ साथियों के साथ बैठे हों। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के दौरान हम इन बच्चों को ऐसे देखते हैं कि सभी बच्चे जमीन में अलग-अलग स्थान पर खड़े हैं और किसी फुटबाल के मैदान में खेल रहें खिलाड़ी के समान अपना स्थान लगातार बदल रहे हैं। स्थान बदलने की इस प्रक्रिया के दौरान कोई बच्चा कभी आगे होता है तो कभी पीछे होता है, परन्तु सभी बच्चे जिस काम को कर रहे होते हैं, उस काम में आनन्द लेते हुए अपनी समझ को लगातार बढ़ाते रहते हैं। इसमें किसी प्रकार का रटना-रटाना, भयमुक्त वातावरण न होकर आनन्ददायी माहौल में समझ को मजबूत करना शामिल होता है। विश्व के लगभग सभी विकसित देशों में सी. सी. ई. को बच्चों के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास हेतु सबसे बेहतरीन पैटर्न माना जाता है। इसमें बच्चे से सिर्फ पाठयपुस्तक पर ही पूरा जोर लगाने की अपेक्षा उसके व्यक्तित्व विकास के सभी पहलुओं के आकलन पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है। इसमें शिक्षकों को बहुत ही सूक्ष्मता से कार्य करने की आवश्यकता होती है। इस कार्य के शिक्षकों को पूर्वाग्रहों से मुक्त कराने तथा सकारात्मक सोच, बच्चों के प्रति समर्पण भाव एवं अध्यापन में रुचि रखने वाले प्रोफ़ेशनल्स की आवश्यकता है।

वर्तमान में भले ही सी.सी.ई. पर काफी जोर दिया जा रहा हो परन्तु इसे धरातल पर उतारने वाले शिक्षकों की मानसिकता इस पैटर्न को सरलता से स्वीकार करने की दिखाई नहीं दे रही है। इसमें जितनी कमी शिक्षकों की वचनबद्धता को लेकर है उससे कहीं ज्यादा कमी तो ऐसे शिक्षकों को समुचित प्रशिक्षण न दे पाने को लेकर विभाग की भी है जिन्होंने सी.सी.ई. जैसे शानदार पैटर्न को लेकर आने के बाद शिक्षक को अकेला ही छोड़ दिया है। मेरा मानना है कि भौतिक परिवर्तन तुरन्त ही दिखाई देते हैं, परन्तु अभौतिक या मन परिवर्तन एक लम्बे समय पश्चात् महसूस की जाने वाली प्रक्रिया है। जैसे हम नए स्मार्ट फोन को लेकर खुद को आधुनिक दिखाते हैं परन्तु किसी शुभ कार्य के लिए घर से निकलते समय यदि बिल्ली रास्ता काट दे तो मन ही मन कई विचार आने लगते हैं और हम वहीं रुक जाना ही उचित समझते हैं। ठीक इसी तरह से शिक्षकों को सी.सी.ई. के मॉड्यूल थमाकर उनसे दो-चार बार बातचीत करके यह मान किया गया कि अब वे सब कुछ ठीक-ठाक कर लेंगे और शिक्षक भी खुद को आधुनिक मान बैठे। परन्तु लागू करने वाले ज्यादातर लोग स्वयं को अभौतिक (मानसिक) रूप से इस हेतु तैयार नहीं कर पाए हैं। इसके लिए हमें शिक्षकों को मानसिक रूप से पहले तैयार करते हुए रटाने की अपेक्षा लर्निंग पर जोर देने हेतु तैयार करना पड़ेगा और इसके लिए नीति बनाने वाले विभाग से लेकर, लागू करने वाले कार्यालयों, शिक्षकों को अकादमिक समर्थन देने वाली संस्थानों को भी पहले लर्निंग फर्स्ट के लिए तैयार करना होगा।

हमारे सतत एवं व्यापक मूल्यांकन विद्यालयों के शिक्षकों से

लगातार बातचीत के बाद कुछ कठिनाइयाँ भी सामने आई हैं जिन पर बातचीत करना बहुत ही जरूरी जान पड़ता है। जैसे - सतत एवं व्यापक आकलन की समझ पर्याप्त नहीं होने के कारण विद्यालयों में आने वाले आगंतुक या बाहरी निरीक्षणकर्ता ऐसे कमेन्ट्स कर देते हैं जो उस कक्षा के शिक्षक को लगातार परेशान करते हैं। बच्चों के साथ समूह में बैठाकर, बातचीत करते हुए शिक्षक को या ब्लैकबोर्ड में लिखते हुए बच्चों को देखकर आगंतुक महानुभाव, शिक्षक पर लापरवाह होने का आरोप तक लगा देते हैं और उनके द्वारा निरीक्षण रजिस्टर पर लिखी गई नकारात्मक टिप्पणियाँ अगले निरीक्षणकर्ता के लिए आधार बन जाती हैं। इनमें से जो निरीक्षणकर्ता थोड़े उदार होते हैं वे भी सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की पर्याप्त समझ नहीं होने के कारण परम्परागत अध्यापन के तरीकों के अनुरूप ही सुझाव देते हुए बाहरी आकलन को ही अधिक महत्वपूर्ण दर्जा देने का प्रयास करते हैं।

पंकज तिवारी मध्य प्रदेश के सिवनी के शासकीय उर्दू हायर सेकेंडरी स्कूल में गणित के शिक्षक हैं। वह पिछले दो दशकों से स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। पंकज राज्य शिक्षा केंद्र (एस.सी.ई.आर.टी.) मध्य प्रदेश से जुड़े हुए हैं, जहाँ वह पाठ्यपुस्तक, प्रशिक्षण मॉड्यूल, मूल्यांकन प्रणाली, गतिविधि-आधारित सीखने और शिक्षण सामग्री के सम्पादन में योगदान देते हैं। मध्यप्रदेश सरकार का राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान "आचार्य सम्मान" उन्हें दिया गया है। पंकज, राज्य संसाधन समूह के प्रमुख सदस्यों में से एक हैं और गणित के शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल और अल्पकालिक पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए NCERT के साथ एक विषय विशेषज्ञ के रूप में जाने जाते हैं। उन्हें गणित करने में आनन्द आता है, वे मेट्रिक मेला का आयोजन करते हैं। बच्चों के साथ काम करना और फुटबॉल खेलना उन्हें पसन्द है। पंकज राज्य स्तर के फुटबॉल रेफरी हैं और राष्ट्रीय स्तर के जिम्नास्टिक खिलाड़ी। उनसे ptiwari740@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।